ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे — निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 27 अंकः 21 बुलेटिन अवधिः 14 – 18 मार्च, 2018 दिनः मंगलवार दिनाँकः 13 मार्च, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	14–03–2018	15–03–2018	16–03–2018	17–03–2018	18–03–2018
वर्षा (मिमी0)	0	0	5	1	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	32	32	29	30	31
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	12	13	13	12	11
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	मध्यम बादल	घने बादल	मध्यम बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	85	90	80	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	45	50	45	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	004	006	008	010	006
वायु की दिशा	दक्षिण–पश्चिम	पश्चिम	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व	दक्षिण–दक्षिण–पूर्व

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (6 से 12 मार्च 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान में आंशिक से घने बादल छाये रहे तथा 0.0 मि0मी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 28.0 से 30.7 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 9.9 से 11.7 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 90 से 98 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 27 से 53 प्रतिशत एवं हवा 3.0 से 7.4 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम–दक्षिण–पश्चिम व पश्चिम–उत्तर–पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

❖ मूंग की बुवाई मार्च के दूसरे पखवाड़े से 10 अप्रैल तक कर सकते हैं।
❖ मूंग की पंत मूंग –5, सम्राट आदि प्रजातियो की की बुवाई 25–30 सेमी0 की दूरी पर बनी लाईनों में करे। बीज की दर 20–25 किलोग्राम रखें। बुवाई की गहराई 3–4 सेमी रखें।
❖ उड़द की बुवाई का उचित समय मार्च का प्रथम पखवाड़ा है अतः उड़द की बुवाई 15 मार्च तक पूरी कर लें।
❖ जायद की सूरजमुखी और मूँगफली की बुवाई 15 मार्च तक अवश्य पूरा कर लें। बुवाई में देर करने से फसल पकते समय वर्षा प्रारम्भ होने से नुकसान होता है।
❖ सूरजमुखी की मोडर्न किस्म, संकर जातियों में बी0एस0एच–1, अरूण, पारस, दिव्यामुखी व ज्वालामुखी आदि की बुवाई करें। प्रति हैक्ट 10–12 कि0ग्रा0 बीज की बुवाई 45 से0मी0 की दूरी पर बनी लाईनों में करें। पौधा से पौधा की दूरी 20 से0मी0 रखें। प्रति हैक्टर 80 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस तथा 40 किलोग्राम पोटाश का प्रयोग करें।
❖ मूंगफली की पंजाब मूंगफली–1, टाईप–64, कौशल, प्राकश, अम्बर आदि किस्मों की बुवाई 30 से0मी0 की दूरी पर बने लाइनों में करें तथा पौधे की दूरी 10 से0मी0 रखें। बीज दर 80–100 किलोग्राम प्रति है0 रखें। 20 किलोग्राम नत्रजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस तथा 45 किलोग्राम पोटाश प्रति है0 प्रयोग करें। फास्फोरस सिंगल सुपर फास्फेट के द्वारा दें।
❖ चारे वाली फसलों–चरी, मक्का, बाजरा, मकचरी, लोबिया और ज्वार आदि की बुवाई मार्च माह में कर सकते है। इनकी बुवाई पूरे मार्च माह तक करें।
❖ सरसों वर्गीय फसलों में पत्तियों पर भूरे रंग के गोल छल्लेदार धब्बे दिखाई देने पर मैनकोजेब 1.5 से 2.0 किग्रा0 प्रति ली0 की दर से छिड़काव करे।
❖ गेहूँ की फसल मे निचली पत्तियो पर पीले रंग के फफोले दिखाई देने पर या पत्तियो पर भूरे धब्बे या नोक से पत्तियो के पीले पड़ कर मुरझाने पर प्रोपीकोनाजोल 25 ई0 सी0 का 1 लीटर/हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
❖ गेहूँ मे पीली गेरूई के प्रकोप में पत्तियाँ पीली पड़ जाती है। खेत में पत्तियों को छूने से पीला रंग हाथ में लगे तो रोग के लक्षण दिखाई देते ही प्रोपीकोनाजाल 25 ई0 जो टिल्ट यादि के व्यवसायिक नाम से बाजार में उपलब्ध है के 500 मि0ली0 हैक्टर की दर से 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

उद्यान प्रबन्धः

❖ मटर की पत्तियो पर पीले चकत्ते दिखाई देने पर प्रोपीकोनाजोल 1 मिली0/ली0 की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
❖ मटर में पौधों की सूखने एवं निचली पत्तियां पीले पड़ने की अवस्था में कार्बेन्डाजिम 1.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ों की सिंचाई करें ।
❖ प्याज और लहसुन की पत्तियॉ उपर से पीली पड़ने पर प्रोपीकोनाजोल या टेबूकोनाजोल का 1 मिली0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
❖ आलू एवं टमाटर की फसल में पछेती झुलसा रोग के प्रकोप से बचाव हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्रा0/ली0 या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3.0 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करे।
❖ टमाटर में पीलापन लिए हुए भूरे धब्बे दिखाई देने पर मैन्कोजेब 2.5 से 3.0 ग्राम प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
❖ गोभी वर्गीय सब्जियो में पत्ती धब्बा रोग के नियत्रंण हेतु मैन्कोजेब का 2.5 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
❖ फल पेड़ों में भुनगा कीट के नियंत्रण हेतु ऐमिडाक्लोरपिड 17.8 एस0एल0 का 0.03 मि0ली0/लीटर की दर से प्रथम छिड़काव पुष्पगुच्छ की शुरूआत में करें। फल की मटर अवस्था पर थियामैथौक्जैम से दूसरा छिड़काव 0.32 ग्राम/लीटर और तीसरा छिड़काव केवल आवश्यकता पड़ने पर दूसरे छिड़काव के 21 दिन बाद एन0एस0के0ई0 5 प्रतिशत का 5 मि0ली0/लीटर की दर से करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- गर्भवती पशुओ में प्यूरपरल बुखार को रोकने के लिए, प्रतिदिन 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण को पशुओं की प्रतिरक्षा को बढ़ाने हेतु आहार के रूप में दें।
- इस महीने में पानी से होने वाली बीमारी की रोकथाम के उपाय करें।
- पशुओं में मच्छरों, मक्खियों टिक्स आदि से होने वाली बीमारी के लिए सावधानी बरतें।
- इस समय पशुओं में बॉझपन और जोहन की बीमारी होने की अधिक संम्भावना है। इस स्थिति में पशुओ का तत्काल इलाज करवाए।
- पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए जिससे उनकी उत्पादन क्षमता प्रभावित न हो तथा इस समय नवजात पशुओं के रख–रखाव पर विशेष ध्यान दें।
- जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।

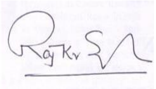

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर